Dr. Ramvilas Sharma ki Hindi Sahitya Ko Den

डॉ. मनोज कुमार

सहायक प्रबंधक (राजभाषा एवं जनसंपर्क), वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड, नागपुर

सन् 1912 में साधारण किसान के घर जन्म लेने वाले डॉ0 रामविलास षर्मा हिन्दी साहित्य के एक ऐसे कुषल चितेरे हैं जिन्होंने साहित्य और समाज की दषा और दिषा को समान्तर रूप से वर्णित किया है। सन् 1934 से 2000 तक उनकी सौ से अधिक पुस्तकों का प्रकाषन हुआ। डॉ0 षर्मा लगभग सात दषकों तक साहित्य समीक्षा के क्षेत्र में अपनी महती भूमिका का निर्वहन करते रहे। उनकी आलोचना की दृष्टि में चाहे मार्क्स हो या लेनिन, ऋग्वेद हो या भारतीय साहित्य आदि सभी के प्रति उनका गंभीर चिंतन देखा जा सकता है।

डॉ0 रामविलास षर्मा के विषय में ऐसा कहा जाता है कि वे अपने विरोधी को अहसास कराकर ही दम लेते थे। इस संदर्भ में यहाँ ये बात विषेष रूप से उल्लेखनीय है कि ज्योतिप्रसाद निर्मल ने 'अभ्युदय' में 'निराला' जी पर अनेक प्रहार किए, जिसके फलस्वरूप डॉ0 रामविलास षर्मा का हिन्दी आलोचना में प्रवेष हुआ। डॉ0 षर्मा ने निर्मल जी की प्रतिक्रिया के विरूद्ध 'निराला जी की कविता' षीषर्क से लेख लिखा तथा उसमें स्पष्ट किया कि निराला के काव्य के नवीन सौंदर्य बोध को रीतिवादी सौंदर्य बोध से हटकर देखा जाए। ऐसा कहा जाता है कि इस लेख के बाद डॉ0 षर्मा ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। वे जीवनपर्यन्त साहित्य साधना में लगे रहे। साहित्य को उनकी मौलिक देन रही है। सन् 1941 में 'प्रेमचन्द' के नाम में उनकी पहली पुस्तक प्रकाषित हुई। आचार्य रामचन्द्र षुक्ल पर चौतरफा आक्रमण से दुखी होकर डॉ0 रामविलास षर्मा ने 1955 में 'आचार्य रामचन्द्र षुक्ल और हिन्दी आलोचना' पुस्तक लिखी और ये स्पष्ट किया कि षुक्ल जी ने न तो भारत के रूढिवाद को स्वीकार किया, न ही पष्चिम के व्यक्तिवाद को। उन्होंने बाह्य जगत ओर मानव जीवन की वास्तविकता के आधार पर नए साहित्य–सिद्धातों की स्थापना की और उनके आधार पर सामंती साहित्य का विरोध किया और देषभक्ति तथा जनतन्त्र की साहित्यिक परम्परा का समर्थन किया। इसी प्रकार छायावादी कविता पर प्रहार होते देखकर वे उसकी रक्षा में डट गए। प्रगतिवादी कवियों में केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, षमषेर, त्रिलोचन और मुक्तिबोध पर लेख लिखे। इन लेखों को सन् 1978 में प्रकाषित 'नई कविता और अस्तित्ववाद' पुस्तक में स्थान मिला।

डॉ0 षर्मा ने 1933 में 'भक्ति और वेदान्त' फिर 1936 में 'कर्मयोग' तथा 1936 में ही 'राजयोग' नाम से पुस्तक लिखी जिसमें स्वामी विवेकानन्द के लेखों का अनुवाद तथा मार्क्स के ग्रन्थ का 'पूंजी' नाम से अनुवाद किया गया। प्रसिद्ध मार्क्सवादी इतिहासकार रजनी पामदन्त की पुस्तक 'इंडिया टुडे' का 'आज का भारत' षीर्षक से (1977) में अनुवाद किया। 'मित्र संवाद' (1992) रामविलास षर्मा और केदारनाथ अग्रवाल के पत्रों का विषिष्ट संग्रह है। उन्होंने मानव समाज के गठन को भाषा, संस्कृति और साहित्य से जोड़कर इस बात पर बल दिया कि यदि किसी भी भाषा के इतिहास को लिखना हो, तो इस बात पर विचार करना आवष्यक होगा कि इस भाषा के व्यवहार करने वाले मानव समाज के गठन का रूप कौन सा है ? ऐसे ही प्रष्नों के हल के लिए उन्होंने सन् 1986 में 'भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ' नामक पुस्तक लिखी। डॉ0 षर्मा की पूरे भारतीय साहित्य एवं संस्कृति पर व्यापक दृष्टि बनी रही। भाषा और समाज (1961) संस्कृति और समाज (1948) प्रगति और परंपरा (1948) प्राचीन भाषा परिवार और हिन्दी (तीन खंड 1979, 1980, 1983) भारतीय साहित्य की भूमिका (1986) भारतीय सस्कृति और हिन्दी प्रदेष (दो खंड–1999) भारतीय सौंदर्यबोध और तुलसीदास

(2006) संगीत का इतिहास और भारतीय नवजागरण की समस्याएँ (2010) मार्क्स, त्रोत्स्की और एषियाई समाज (1986) तथा पष्चिम एषिया और ऋग्वेद (1994) इत्यादि असंख्य पुस्तकों की रचना करके हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया।

डॉ0 रामविलास षर्मा द्वारा रचित इन पुस्तकों के लेखन के संदर्भ में यह कहना गर्व का विषय है कि आलोचना में समाज दर्षन, साहित्य–दर्षन, सौंदर्य दर्षन तथा नई समीक्षा के प्रष्नों पर व्यवस्थित ढंग से विचार करने के लिए डॉ0 षर्मा सदैव याद किए जाएँगे। डॉ0 रामविलास षर्मा की छवि एक संहारक योद्धा आलोचक की थी। यह भी एक संयोग ही था कि डॉ0 षर्मा अंग्रेजी साहित्य की परम्परा की संवादधर्मिता और समृद्धि लेकर आए थे। इसके साथ–साथ निष्छलता, सहज भावुकता, तार्किकता तथा देषी ग्राम–जीवन की जीवंतता के गुण उनके लेखन की विषेष धरोहर है। इनके लेखन से प्रभावित होकर पं0 नंददुलारे वाजपेयी ने डॉ0 षर्मा जी की पुस्तक 'भाषा और समाज' को साहित्य अकादमी पुरस्कार के लिए अनुषंसित किया था।

डॉ0 विजय बहादुर सिंह ने 'बहुवचन' अन्तरराष्ट्रीय पत्रिका (अक्टूबर–दिसम्बर, 2012) में प्रकाषित अपने आलेख – 'कोरे आलोचक नहीं थे रामविलास षर्मा' में स्पष्ट रूप से लिखा है कि – 'उनके लेखन का परिदृष्य अत्यन्त विराट और विस्तृत है। न केवल साहित्य–सृजन, भाषा–परंपरा, भाषा–विज्ञान, उपनिवेषवाद, पूँजीवाद, राष्ट्रीय आंदोलन, आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता बल्कि इन तमाम वैचारिक बहसों को उठाते हुए वे भारत की वर्तमान संस्कृति और हिन्दी प्रदेषों की उन जीवंत विरासतों की ओर बार–बार हमारा ध्यान खींचते हैं, जिनको पहचानना और संवाद करना किसी भी महत्त्वपूर्ण लेखक की आज पहली जिम्मेदारी बनती है।'

डॉ0 रामविलास षर्मा जितने स्वंय के प्रति निष्ठावान है उतनी ही स्नेहषीलता, उदारता तथा उन्मुक्तता दूसरों के प्रति भी है। निराला की साहित्य साधना, भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद, पष्चिमी एषिया और ऋग्वेद तथा भारतीय संस्कृति और हिन्दी प्रदेष आदि कृतियों में ऐसी भावनाओं के सजीव उदाहरण देखे जा सकते हैं। स्वदेषी आंदोलन राष्ट्रीय स्वाधीनता को किस प्रकार षक्ति प्रदान करता है, इसका जवाब डॉ0 षर्मा ने अपनी कविता संग्रह – 'सदियों से सोये जाग उठे' की भूमिका में लिखा था – 'बहुराष्ट्रीय कंपनियों के माल का बहिष्कार किया जाए तो भारत आत्मनिर्भर बनेगा, उसी परिणाम में युद्ध की तैयारी के लिए आवष्यक धन का एक Òोत बंद होगा। इस समय इन कंपनियों की घुसपैठ केवल भारत में नहीं, समाजवादी देषों में भी हो रही है। स्वदेषी आंदोलन की जरूरत केवल भारत को नहीं, समाजवादी देषों को भी है। भारत इस आंदोलन का केन्द्र रहा है, उसे इस मामले में पहल करनी चाहिए। अपने अमल से उसे दुनिया को दिखा देना चाहिए कि स्वदेषी आंदोलन कैसे राष्ट्रीय स्वाधीनता को सुदृढ़ करता है और साम्राज्यवादी युद्ध षक्तियों को पंगु करता है।'

जीवनभर अंग्रेजी पढ़ाकर अपनी रोजी–रोटी कमाने वाले डॉ0 रामविलास षर्मा की हिन्दी भाषा के प्रति अटूट और अखण्ड आस्था थी। उन्होंने अपनी पुस्तक 'भारतीय संस्कृति और हिन्दी प्रदेष' (खंड–एक, पेज–63) पर लिखा है कि – 'ऋग्वेद में ऋषि अनेक प्रकार का षारीरिक श्रम करते हैं। किसी भी तरह का श्रम हो, उससे उन्हें घृणा नहीं है। इस षारीरिक श्रम के साथ वे काव्य भी रचते हैं, यज्ञ करते हैं, देवताओं के लिए स्तुतियां बनाते हैं। समाज से ऊंच–नीच को मिटाने का एकमात्र तरीका यह है कि मनुष्य सब तरह का श्रम करे, जो लोग षारीरिक श्रम करते हैं, उन्हें भी पढ़ने–लिखने का अवसर मिले, मानसिक श्रम से उन्हें दूर न रखा जाए। इसी तरह, जो लोग मानसिक श्रम करते हैं, वे अपने को समाज का श्रेष्ठ प्राणी न समझें। वे भी षारीरिक श्रम करें। इस तरह समाज मे समानता का भाव पैदा होगा।'

सच तो यह है कि डॉ0 रामविलास षर्मा मूलतः दार्षनिक चिंतक हैं, वे साहित्यालोचना से लेकर भाषाविज्ञान तक और दर्षन से लेकर इतिहास तक हर क्षेत्र में मौलिक ढ़ंग से तथा सहज रूप में अपनी अभिव्यक्ति करने में समर्थ हैं।

उनकी मूल्यांकन दृष्टि का एक गुण यह भी है कि वे अंतर्विरोधों की व्याख्या करते हुए अपने पाठक को न सिर्फ प्रगतिषील और प्रतिक्रियावादी विचारों के प्रति सजग बनाते हैं, बल्कि उन विचारों की वर्गीय भूमिका का बोध भी कराते हैं। उनकी यह भी एक विषेषता है कि उन्होंने सांस्कृतिक इतिहास के निर्माण में संकीर्ण राष्ट्रवादी रूख नहीं अपनाया इसलिए उनके समूचे लेखन पर ध्यान दिए बिना हम न इस इतिहास को समझ सकते हैं, न ही रामविलास जी के दृष्टिकोण को। इन्होंने अनथक भाव से निरन्तर एक तपस्वी की भांति हिन्दी आलोचना में जो काम किया है, उसके लिए आगे की पीढ़ियाँ उनकी कृतज्ञ रहेंगी। अन्त में डॉ0 विजेंद्र जी के षब्दों में कहा जा सकता है कि – 'हिन्दुस्तान में राजनीतिक संकट के साथ सांस्कृतिक संकट भी है, फिर भी कलम में बड़ी ताकत है। संकट आएंगे–जाएंगे। कलम की उपज बनी रहेगी। विवेक तो बहुतों के पास है। 'सहृदयता की पूंजी' बहुत कम लोगों के पास रह गई है। इसी के सहारे भविष्य को देखते हैं, जीते हैं।'

सन्दर्भ सूची

(1) संस्कृति और साहित्य – रामविलास शर्मा
गोकुलपुरा, आगरा (26 सितम्बर 1952)

(2) भाषा और समाज – डॉ0 रामविलास शर्मा
पीपुल्स पब्लिषिंग हाउस (प्रा0) लिमिटेड
रानी झांसी रोड, नई दिल्ली (अगस्त 1961)

(3) भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिन्दी – रामविलास शर्मा (1981)
राजकमल प्रकाषन प्राइवेट लिमिटेड
8, नेता जी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली – 110002

(4) भाषा युगबोध और कविता – रामविलास शर्मा
वाणी प्रकाषन, दिल्ली – 110007

(5) बहुवचन (हिन्दी की अंतरराष्ट्रीय त्रैमासिक पत्रिका)
संपादक – अषोक मिश्र
महात्मा गांधी अतंरराष्ट्रीय हिन्दी विष्वविद्यालय,
गांधी हिल्स, वर्धा – 442005 (महाराष्ट्र)